स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स
RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

कैदियों पर दवा परीक्षण

मिशिगन विश्वविद्यालय के शिशु रोग चिकित्सक और चिकित्सा इतिहासकार डॉ. होवार्ड मार्केल के अनुसार कुछ वर्षों पहले यूएस राष्ट्रपति बराक ओबामा ने ग्वाटेमाला के राष्ट्रपति से माफी मांगी थी। ओबामा ने यह माफी यूएस सरकार के नेतृत्व में 1940 के दशक में किए गए शोध के लिए मांगी थी और कहा था कि ऐसी कोई घटना दुबारा न घटे।

जिस घटना की बात हो रही है वह चिकित्सा के इतिहास में एक बहुत ही शर्मनाक वाकया था जो सन 1946 में हुआ था। ग्वाटेमाला के सैकड़ों कैदियों, वेश्याओं और मानसिक रोगियों को जानबूझकर सिफलिस से संक्रमित किया गया था। उनमें से 83 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई थी। इन लोगों को नई खोजी गई दवा पेनिसिलीन के अध्ययन के लिए संक्रमित किया गया था, और इसके लिए उन लोगों से पहले से अनुमति तक नहीं ली गई थी।

यूएस सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा और पैन अमेरिकन स्वच्छता ब्यूरो ने 1946-1948 तक ग्वाटेमाला की कुछ सरकारी एजेंसियों के साथ काम किया। बताया जाता है कि इस अनुसंधान के दौरान 1300 लोगों को सिफलिस, गनोरिया या कैंक्रॉइड व अन्य यौन संचारित रोग हुए थे।

इस घटना की जांच के लिए गठित राष्ट्रपति पैनल का कहना है कि सरकारी वैज्ञानिक यह जानते थे कि वे नियम-कायदों को तोड़ रहे हैं।

लेकिन यह केवल एक केस नहीं है। ऐसे कई केस हैं जहां लोगों को गिनी पिग समझकर उन पर क्लीनिकल ट्रायल किए जाते हैं। अमेरिकन दवा कंपनियां आज भी दवाओं की जांच गरीबों, विकासशील देशों के लोगों पर करती हैं।

प्रकाशक, मुद्रक अरविन्द सरदाना की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462011 से मुद्रित। सम्पादक: डॉ. सुशील जोशी